'ब्रह्म सत्यं जगत् स्फूर्तिः, जीवनं सत्यशोधनम्'

विनोबा-प्रवचन

(सप्ताह में तीन बार—मंगल, गुरु और शनि को प्रकाशित)

वर्ष ३, अंक ९८ | वाराणसी, शनिवार, २९ अगस्त, १९५९ | पचीस रुपया वार्षिक

स्वागत-प्रवचन

श्रीनगर (कश्मीर) २-८-'५९

खूबसूरत कश्मीर के इन्सान भी खूबसूरत हों

दस हफ्ते हुए, हमारी यात्रा इस खूबसूरत प्रदेश में हो रही है। हमने देखा कि यहाँके लोगों का दिल वसी है और आफत में भी वे मस्त रहते हैं। यहाँपर (कानून की वजह से) मालिकों के पास जमीन थोड़ी रही है, लेकिन वे उसमें से भी प्यार दिखाने के लिए कुछ-न-कुछ दे देते हैं। यह सब देखकर हमें बड़ी खुशी हुई। जहाँ ऐसी जिंदादिली हो, दिल में मुहब्बत, रहम, हमदर्दी हो, वहाँ इन्सान और इन्सानियत की बहुत तरक्की हो सकती है। यह 'पोटेन्शियल' (गर्भित शक्ति) चीज पड़ी है, जिसे 'डेवलप' (विकसित) करना है। हमने देखा कि इन्सान की तरक्की के लिए जो सामान चाहिए, वह सारा यहाँ मौजूद है। खूबसूरत कुदरत है तो इन्सान भी बदसूरत नहीं हो सकता। लेकिन हमने यहाँपर जितने 'ब्यूटी स्पॉट्स्' देखे, वहाँ इनकी गुर्बत भी देखी। वहाँकी ब्यूटी हमारे दिल को खींच नहीं सकी। खैर! गुर्बत मिटाने का मसला हम सबके सामने पड़ा है, सिर्फ कश्मीर के सामने ही नहीं, बल्कि सारे हिंदुस्तान के और करीब-करीब आधी दुनिया के सामने पड़ा है। यह खूब समझने की बात है कि हम एक नहीं होंगे तो उसका मुकाबला नहीं कर सकेंगे।

तफरके मिटने से ही सुकून कायम होगा

मेरे आने के पहले यहाँ सैलाब आया तो एक तरह से सैलाब ने हमारा मसावात का पैगाम पहुँचा दिया। सैलाब की वजह से जो मसले खड़े होते हैं, उनका मुकाबला हम अच्छी तरह से तभी कर सकते हैं, जब हम एक होंगे। मजहब, कौमें, जबानें वगैरह सब तफरके मिटाकर हम अपने दिल को वसी बनायेंगे, तभी कश्मीर और हिंदुस्तान की ताकत बनेगी और वह ऐसी ताकत होगी, जिससे दुनिया का हर शख्स सुकून पायेगा। वह तोड़नेवाली नहीं, बल्कि जोड़नेवाली ताकत बनेगी। मुझे उम्मीद है कि ऐसी ताकत यहाँ बनेगी। इसीलिए मैंने नया 'कौल' चलाया है 'जय-जगत्'।

हमारा कौल

'जय-जगत्' को मैंने नारा नहीं कहा, कौल कहा, क्योंकि नारे एक-दूसरे की मुखालिफत कर सकते हैं, झगड़े पैदा कर सकते हैं। 'जय-जगत्' के पेट में 'जय-हिंद', 'जय-कश्मीर', 'जय-गाँव' सब आ जाता है। पुराना तरीका यह था कि एक की जीत में दूसरे की हार होती थी। लेकिन अब हमने नया तरीका निकाला है, जिसमें आपकी, हमारी, सामनेवाले की, सबकी जीत ही होती है। इसीलिए सर्वोदय का कौल है, 'जय-जगत्'। हमने दो साल से यह कौल चलाया है और खुशी की बात है कि सब सूबों के लड़कों ने उसे उठाया है, सबकी जबान पर वह बैठ गया है। वह अंदर चला जाय, दिल और दिमाग में चला जाय तो हमारा काम होगा।

सर्वोदय-साहित्य घर-घर फैले

मैं चाहता हूँ कि श्रीनगर के हर घर में सर्वोदय की किताबें पहुँचें और श्रीनगर में ऐसा कोई घर न रहे, जहाँ यह श्री न पहुँचे। विचार से बढ़कर कौन श्री, शोभा, जीनत हो सकती है? मेरा कोई इदारा नहीं है, न मेरे हाथ में हुकूमत है, न मैं हुकूमत चाहता हूँ। फलाने मेरे और फलाने मेरे नहीं, ऐसा नहीं, है। जो भी मेरे सामने बैठे हैं, वे मेरे हैं। आप सब मेरी किताबें खुद पढ़िये, दूसरों के पास पहुँचा दीजिये और आप ही मेरे कारकून (कार्यकर्ता) बन जाइये। यहाँपर जो ५० हजार हैं, इन सबमें आप सर्वोदय-साहित्य पहुँचा देंगे तो आपकी और मेरी सोहबत कायम के लिए बनी रहेगी। मैं आशा करता हूँ कि श्रीनगर सर्वोदय-नगर बन जाय और कश्मीर सर्वोदय-स्टेट बन जाय।

लफ्जी नहीं, असली दान हो

जब मैंने जम्मू-कश्मीर में कदम रखा था, तब बख्शीजी ने कहा था कि "दान माँगने के लिए आप जैसे फकीर आये हैं तो मैं सारे स्टेट का दान देने के लिए तैयार हूँ।" यह सिर्फ लफ्जी दान नहीं, बल्कि असली दान हो और यह सर्वोदय-स्टेट बने, जिसके मानी है कि यहाँपर सबका भला हो। कश्मीर हिंदुस्तान का सिर है तो वह सर्वोदय का भी सिर बने।

◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

अनन्तनाग (कश्मीर) ११-८-'५९

भूदान तहरीक में अल्ला के दर्शन का नजरिया है

आज की यह जगह बहुत खूबसूरत है। सामने पहाड़ है, हवा अच्छी बह रही है, नाला बह रहा है और अत्यन्त शान्ति है, एकांत है। यह सारा देखकर बहुत खुशी हुई। इन दिनों मैं कुछ लिख रहा हूँ। थोड़ा एकान्त मिला तो अच्छा ही हुआ। मैं अन्दरूनी बातें, रूहानी बातें लिखता हूँ। बचपन से ही मेरा झुकाव रूहानियत की ओर है। रूहानी ताकत हासिल करना यही मेरी जिन्दगी का मकसद मैंने माना है। मैं जो भी काम करता गया, उसमें भी मेरा यही नजरिया रहा है। जो भी काम करूँ, सेवा के लिए करूँ, यही विचार उसके पीछे रहा है। अब यह भूदान-तहरीक मैंने उठायी है, वह भी आत्म-दर्शन के लिए, अल्ला के दर्शन के लिए। इसी नजरिये से आज तक मेरा सब काम चला है। आज भी जो काम लेकर मैं चला हूँ, वह भी एक रूहानी चीज है।

जमीन के मसले की बात

आज तक लोगों ने देखा कि जमीन का मसला कानून और कतल से हल करना नामुमकिन है। कानून से जमीन छीनने पर भी मसला हल नहीं होता है। लोगों ने अपने पास जमीन रखी ही है। बड़े-बड़े जमीनदार, जिनके पास धन, दौलत ज्यादा थी, उनकी कत्ले-आम अपने देश में भी हुई है और दूसरे देशों में भी! कत्ल और कानून से दिल से दिल नहीं जुड़ता, उससे अन्दरूनी ताकत नहीं बनती। बाहरी चीज बनती है। अन्दरूनी ताकत बढ़े बगैर, दिल के साथ दिल जुड़े बगैर बाहरी बदल करेंगे तो फिर से उसे दुहराना होगा। उससे कायमी असर नहीं होगा। आज तक अमीर सुखी थे, अब गरीब सुखी बन गये। लेकिन अमीर दुःखी बन गये। एक तबका सुखी, दूसरा तबका दुःखी। पहले भी ऐसा ही था। एक सुखी था, उसे दुःखी बनाया। और दूसरा दुःखी था, उसे सुखी बनाया। दुःखी को सुखी और सुखी को दुःखी। क्या फर्क हुआ? उससे समाज में इन्किलाब तो आया नहीं! इन्किलाब की बात बहुत लोग करते हैं। लेकिन इन्किलाब तब होता है, जब दिल बदलता है, रहम होती है, दूसरे को मदद करने की ख्वाहिश हमेशा दिल में होती है। दूसरे की तरक्की हो, दूसरे को पहले खाना मिले, यह तमन्ना होती है। जैसे माँ घर में सोचती है, वैसे सोचना यह तबदीली है। तभी इन्किलाब होता है। यह बदन, शरीर हम रोज धोते हैं। रोज धोना ही पड़ता है। लेकिन बाहर तबदीली करते-करते हम अन्दर तबदीली करना भूल जाते हैं। अन्दर शान्ति, अमन कुछ नहीं। दिल बदला नहीं। इसलिए जद्दो-जहद जारी है। इस रूप में या उस रूप में, लेकिन जारी है।

पड़ोसी धर्म

हमारी यह भूदान-तहरीक इसी चीज को छूती है। वह बुनियाद को छूती है। आज वह समाज की बुनियाद को बदलनेवाली है। 'वेल्यूज' (मूल्य) बदलनेवाली है। यह नहीं होता, तब तक बाहरी बदल, बाहर किये हुए फर्क ज्यादा टिकते नहीं हैं। असन्तोष और नाराजी जारी रहती है। इसलिए हमने उसके लिए एक तरीका निकाला है। अपने पास जो भी है, धन, दौलत, जमीन, बुद्धि, ताकत-उसकाएक हिस्सा हम अपने पड़ोसी को दें। हम तो कहते हैं कि जमीन का मालिक इन्सान हो नहीं सकता। हवा, पानी जैसी जमीन भी अल्ला ने सबके लिए पैदा की है। इसलिए उसपर सबका हक है, सबको वह मिलनी ही चाहिए। कानून से जमीन पर अपनी मालकियत लोग साबित करते हैं। लेकिन कानून आखिर इन्सान ने ही बनाया है! जमीन तो भगवान ने पैदा की है। तुम जमीन के मालिक हो। लेकिन मर जाओगे तो जमीन को तो साथ ले नहीं जाओगे! आखिर यह मकान, यह शरीर, यह चोला भी छोड़के ही जाना होगा। यह जाहिर है कि इस जिस्म के हम मालिक नहीं हैं। भगवान ने हमें ताकत, अक्ल, दौलत दी है, वह सबके लिए दी है। हमारी अक्ल से हम दूसरे को लूट भी सकते हैं और मदद भी कर सकते हैं। अल्ला ने हमें जो नियामतें दी हैं, उसका हमने नाजायज उपयोग किया तो क्या अल्ला खुश होंगे? नहीं। इसलिए हमने अपनी अक्ल, दौलत, ताकत का गलत उपयोग किया, दिल तंग रखा तो वह सैतानियत होगी, इन्सानियत नहीं होगी। ताकत मेरी खुदगर्जी के लिए नहीं है। उसी तरह मेरी जमीन, दौलत, अक्ल सब लोगोंकी खिदमत के लिए नजर होनी चाहिए। हम अपनी-अपनी चीज को पकड़े रखेंगे तो अल्ला की ख्वाहिश के मुताबिक नहीं करेंगे। हम अल्ला के मंसूबों के खिलाफ काम करते हैं, इसलिए दुनिया में दुःख पैदा होता है। हम सब अल्ला की सन्तानें हैं। अल्ला यह तो नहीं चाहेगा कि उसकी सन्तान दुःख में रहे। बाप अपने बेटे के लिए ऐसा दुःख नहीं चाहता है। अल्ला तो 'गफर् रहीम', रहम करनेवाला है, वह अपनी माँ है, बाप है। उसने हमारे लिए सुख पैदा किया, लेकिन हमने सुख को दुःख बना दिया। अब हमें जाग जाना चाहिए।

यह जमाने की पुकार है

अपने पास जो है, वह गरीबों के लिए, दुःखियों के लिए, बेजमीनों के लिए दीजिये। मैं कहता हूँ, यह होनेवाला है, इसे बहुत देर नहीं है। लोग कहते हैं कि इसे समय बहुत लगेगा। मैं कहता हूँ फिजा तैयार होने में समय लगेगा, देरी लगेगी। लेकिन कुछ देर बाद लोग देंगे, जरूर देंगे। अब उसका समय आया है। जमाना ऐसा आ रहा है कि देना लाजमी होगा। हमारी यात्रा में क्या होता है? हम रोज जहाँ जाते हैं, वहाँ लोगों से हिसाब माँगते हैं, कहते हैं रोज देना चाहिए। जैसे रोज खाना, रोज पीना, रोज सोना, वैसे ही भूखे को देना और दिलाना भी रोज होना चाहिए। आज ये लोग मानते हैं कि यह बाबा की तहरीक है। लेकिन इससे काम नहीं होगा। यह हरएक की तहरीक है, मुल्क का काम है ऐसा मानकर आप सबको तय करना होगा कि रोज घूमेंगे, जमीन हासिल किये बिना शाम को भोजन नहीं करेंगे। एक समय तो खाना ही पड़ता है, क्योंकि काम करना है। लेकिन काम किये बिना शाम को नहीं खायेंगे।

यह नाला बह रहा है, ऊपर वह ताल बह रहा है। कुल मिलकर चारों ओर से समुन्दर में पानी जा रहा है। जहाँसे भी दौड़ा, बस, पहुँच गया, समुंदर में। नाला यमुना में मिलेगा, गंगा में मिलेगा और आखिर बाद में समुंदर में पहुँचेगा है। उसी तरह से चारों ओर से यह निकला वह निकला, जमीन माँगी और गरीबों को दे दी। ऐसा होगा तो फिर यह हिसाब नहीं होगा कि ४० लाख एकड़ जमीन प्राप्त करने के लिए इतने साल लगे तो ५ करोड़ एकड़ जमीन के लिए कितने साल और लगेंगे?

रहम सबके मन में छिपी है। उसे बाहर लाना है। अगर अन्दर हमदर्दी नहीं होती, तब तो हम इसमें कामयाब नहीं होते। बाबा इसी कोशिश में है कि वह अंदर की रहम, हमदर्दी बाहर लाये।

भ्रामक प्रचार

जम्मू-कश्मीर में हम ढाई महीने से घूम रहे हैं। हमें अच्छा तजुरबा हो रहा है। लोगों के पास हम पहुँचेंगे तो हमें जरूर जमीन मिलेगी। यहाँ लोग देते भी हैं। 'टाइम्स ऑफ इंडिया' के करस्पॉन्डेंट ने एक बिलकुल गलत खबर छापी है। मालूम नहीं ऐसी खबर क्यों छापी है कि बाबा को रद्दी जमीन मिल रही है। अब लोग रद्दी जमीन आखिर देंगे भी कहाँसे? यहाँ जरखेज जमीन है। उसका हिस्सा लोगों ने दिया है। पर मान लीजिये कि किसीने खराब जमीन दी। लेकिन जान बूझकर कोई ऐसी जमीन नहीं देता है। इस तरह रिपोर्ट करना बिलकुल गलत बात है। एक रूहानी ताकत पैदा हो रही है, उस ओर ध्यान न देकर इस तरह लिख डाला है। मैं सोचने लगा कि इतनी गलत खबर उसे कहाँसे मिली होगी?—यह बात ठीक है कि आंदोलन की शुरुआत में पहले थोड़ी जमीन खराब भी मिलती थी। लेकिन पहली बारिश में पानी हमेशा गन्दा आता है। बाद में साफ हो जाता है। उसी तरह पहले खराब जमीन मिलती थी, यह कहना ठीक था। लेकिन इन दिनों कश्मीर में जो जमीन मिल रही है, वह अच्छी जमीन मिल रही है। खैर! इस तरह जहाँ लोग प्यार से काम करते हैं, वहाँ उसका खंडन करना, उसे तोड़ना आसान है। उसे बनाना आसान नहीं है। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन

ऐशमुकाम (कश्मीर) १६-८-'५९

भाषा और भूषा वर्गभेद का कारण न बने

ढाई महीने से ज्यादा अर्सा हुआ, हम यहाँ घूम रहे हैं। इतने वख्त में मुख्तलिफ जमातों से काफी बातें हुई। उन सब लोगों ने दिल खोलकर अपनी-अपनी बातें हमारे सामने रखीं। उससे काफी जानकारी हमें मिली। मेरा मानना है कि काफी अच्छी फिजा पैदा हुई है।

सियासत से जो बहुत सारे झगड़े हो रहे हैं, उनसे कुछ खास काम नहीं बनेगा, जमीन का, अवाम का काम नहीं बन पायेगा, इस बात का कुछ एहसास दुनिया को हुआ है और बाबा जो कुछ कहता है, उससे कुछ बात बनेगी, यह बात भी धीरे-धीरे लोगों के ध्यान में आ रही है। मजहब, फिरके तथा जमातों का खयाल छोड़ें, इन्सान को इन्सान के नाते पहचानें, एक-दूसरे पर प्यार करें, ऐसा मिला-जुला समाज बहुत फायदेमंद रहेगा—इस तरह का खयाल लोगों के दिल में आ रहा है, ऐसा हमें लगा।

अल्ला एक है

यह ऐशमुकाम है। यहाँ एक बड़े बुजुर्ग हो गये। उन्होंने यही तालीम दी कि अल्ला एक है, न कि दो, चार, बीस हैं। सबपर रहम, हमदर्दी रखो। उसीने सबको पैदा किया है। वह सबकी देखभाल करता है। उसकी निगाह में हम सब एक हैं, समान हैं। वह यह नहीं देखता है कि फलाना शख्स किस मजहब का, जाति का या फिरके का है, बल्कि वहाँ उसके सामने हम खड़े होंगे तो वह यह पूछेगा कि मैंने तुझे इन्सान का चोला देकर भेजा था, तूने दूसरे पर हमदर्दी की या नहीं? रहम रखी थी कि दिल तंग बनाया था, सख्त बनाया था? वहाँ यही पूछा जायगा और यही देखा जायगा। उसके मुताबिक हमें फौरन फल मिलेगा। यही बात बुजुर्गों ने बतायी थी। यही बात संतों ने, ऋषि-मुनियों ने, नबियों ने भी कही है। अब आप लोग कहेंगे कि यही बात यह बाबा भी बता रहा है। इतने ऋषि-मुनि यह कहकर गये तो भी झगड़े, दुःख कुछ मिटे नहीं, कम नहीं हुए। सियासत के झगड़े भी हैं। यह सारा बाबा की तालीम के बावजूद भी हो रहा है तो इस बाबा से हमें क्या फायदा मिलेगा? इसलिए हम इस बाबा की बात सुन लेंगे, उसकी उतनी ही इज्जत करेंगे, जितनी पहले के ऋषि-मुनि, बुजुर्गों की की थी। वे लोग हमारी बात सुनेंगे। लेकिन बरतेंगे वैसा ही, जैसा बरतना है। यह बाबा मर जायगा तो उसकी भी गिनती पुराने बुजुर्गों में करेंगे। लेकिन हमारी जिंदगी वैसी ही रहेगी।

इस तरह सोचना ठीक नहीं है। क्योंकि पुराना जमाना बदल गया है। पुराने ऋषि-मुनि और नबियों ने बातें की थीं, वह जमाना पुराना था। यह विज्ञान का जमाना है। विज्ञान ने बहुत बड़ी ताकत इन्सान के हाथ में दी है। बिजली की ताकत, एटम की ताकत! यह ताकत ऐसी है कि दुनिया का खात्मा भी कर सकती है और दुनिया की पैदावार भी बढ़ा सकती है। शस्त्रास्त्रों की नयी-नयी ईजादें हो रही हैं। यह जमाना माँग कर रहा है कि विज्ञान ने पैदा किये हुए औजारों का उपयोग करना चाहते हो तो एक होकर रहना होगा। इस हालत में सब मिलकर काम करोगे, कर सकोगे तो पैदावार बढ़ेगी। अगर ऐसा न हुआ तो कशमकश जारी रहेगी। नये-नये हथियार ईजाद हो रहे हैं। उसकी बदौलत दुनियाका खात्मा होने की तैयारी हो रही है। फिर किसी प्रकार की तरक्की—न माली न अखलाकी—नहीं होगी।

इसलिए यह ध्यान में रखिये कि अब जमाना आया है। ऋषि-मुनियों ने जो कहा था, उस बात की ताइद विज्ञान कर रहा है। दोनों ओर से जमाना कह रहा है कि तुम लोगों को एक होकर रहना होगा। हवा, पानी जैसी जमीन भी सबकी है, सबके लिए है। किसी तरह से जाती मालकियत, व्यक्तिगत मालकियत अब नहीं रहेगी। यह बात विज्ञान भी कह रहा है और रूहानियत के उसूल भी यही बताते हैं। इसलिए हमारी जिन्दगी जैसी आज तक चलती रही, वैसी इसके आगे नहीं चल सकती। उसमें हमें बदल करना ही होगा।

बुजुर्गों की बातों पर अमल करें

आज हमारे दिल इतने तंग हो गये हैं कि पुराने बुजुर्गों की बातें, सीख, तालीम अच्छी तो लगती है, लेकिन हम उस मुताबिक काम नहीं करते हैं। पुराने बुजुर्गों की बातें बा-इज्जत सुनते हैं, लेकिन अमल में नहीं लाते हैं। जिन्दगी का तरीका वही चलता रहेगा, यह बँटवारा लोगों ने अपने मन में कर लिया है। उनकी बातें सुनकर थोड़ा दान-धर्म करेंगे, खुद को ज्यादा तकलीफ हुए बगैर करेंगे। जियारत के लिए थोड़ा पैदल जायँगे, फूल चढ़ायेंगे, एकाध दिन फाका भी कर लेंगे। लेकिन उससे ज्यादा नहीं

करेंगे। भाइयो, मुझे तो यह कहना है कि रूहानियत जो बातें करती है, वे ही बातें विज्ञान कर रहा है। इसलिए इसके आगे 'मैं, मेरी' यह बात नहीं चलेगी। अलग-अलग मालकियत रखोगे तो माली तरक्की भी नहीं होगी और रूहानी तरक्की भी नहीं होगी। इसलिए मालकियत सबकी बनाइये। साइन्स और रूहानियत दोनों की बातें नहीं सुनोगे तो मरने की नौबत आयेगी। किसी प्रकार की तरक्की नहीं होगी। झगड़े बढ़ेंगे और हम खो जायँगे। इसका इलाज यही है कि हम अपने बुजुर्गों की बातें ऊँची न मानें। उनको अमल में लायें, जिन्दगी में लायें तो खुश रहेंगे। उन्हींकी बनायी हुई राह पर चलेंगे तो बहुत पायेंगे, खोयेंगे नहीं।

आप यह ध्यान में रखिये कि इस बाबा को यह उम्मीद है कि उसकी बातें आप सिर्फ सुनेंगे नहीं, अमल में भी लायेंगे। क्योंकि जमाने का तकाजा है। इसीलिए बाबा की वाणी में, जबान में जोर है। ये बातें होकर रहेंगी, नहीं तो दुनिया तबाह होगी।

सियासतदाँ नादान हैं

इन दिनों ये सियासतदाँ जो निकले हैं, जिनको हम नादान कहते हैं, उनके कारण दुनिया में झगड़े बढ़ रहे हैं। वे अपनी बातों से दुनिया को तबाह करेंगे, कर सकते हैं। उनके रवैये ऐसे ही होते हैं जिनसे वे आप में मेल-जोल नहीं होने देंगे। समाज के टुकड़े टुकड़े करेंगे। इसलिए हमारी आपसे यह अपील है कि आप रूहानियत की तरफ ध्यान दीजिये, ऋषि-मुनियों की बातें आज के जमाने के लिए जरूरी हैं ऐसा समझें और उन सियासतदाँ के फंदों में न आयें। यह बात आप अच्छी तरह से ध्यान में लायें और इस पर गौर करें।

कश्मीरी जबान की तरक्की हो

दूसरी बात यह है कि मैं चाहता हूँ कि कश्मीरी जबान खूब फले, फूले। उसकी तरक्की हो। वह स्कूलों में चले और उनमें अच्छी अच्छी किताबें शाया हो। हिंदी उर्दू, अरबी, फारसी, संस्कृत भी चले। थोड़ी अंग्रेजी भी चले। थोड़े बच्चे अरबी, संस्कृत सीखेंगे, ज्यादा हिंदी उर्दू सीखेंगे और उससे भी ज्यादा कश्मीरी सीखेंगे। अगर कश्मीरी जबान यहाँ नहीं चलेगी तो शहर और देहात के बीच एक दीवार सी खड़ी हो जायगी। इल्म से देहाती दूर रहेंगे। चंद लोगों को इल्म रहा तो वे बाकी लोगों को, गरीबों को चूसते, लूटते, ठगते रहेंगे। और दोनों के बीच कशमकश, दंगे-फसाद जारी रहेंगे। इसलिए जरूरी बात यह है कि शहरवाले लोग भी कश्मीरी जबान सीखें, पढ़ें, लिखें, बोलें। यह न समझें कि यह गँवार लोगों की जबान है। जिस जबान में लल्ला के वाक्य हैं, वह जबान गवारों की नहीं हो सकती है। और न बेवकूफों की ही हो सकती है।

हिंदी और उर्दू जबान बड़ी है, लेकिन कश्मीरी भी उतनी ही बड़ी है। वह आसान भी है। आपकी माँ की जबान है। बच्चों को स्कूल में वह जबान लाजमी नहीं है।—माँ बोलेगी कश्मीरी, बाप बोलेगा उर्दू, बाजार में उर्दू चलेगी और उस्ताद अंग्रेजी बोलेगा। इस तरह तीन बाजू की खिचानों में आपके तीन टुकड़े हो जायेंगे। देहात और शहर के बीच दीवार खड़ी रहेगी। उनमें मेल नहीं होगा। इसलिए आपको फक्र होना चाहिए कि आप कश्मीरी बोलते हैं। कश्मीरी बोलना नीचा नहीं है। हिंदी, उर्दू बोलनेवाला अकलवाला नहीं है, ऐसा मानना गलत है। मादरी जबान के सिवाय दूसरी कोई जबान नहीं चलेगी। इंगलैंड में ८० प्रतिशत लोग दूसरी जबान नहीं जानते हैं। सिर्फ इंग्लिश जानते हैं, बोलते हैं, और पढ़ते हैं। उसमें फक्र महसूस करते हैं। इसलिये यह न समझें कि कश्मीरी चमारों की, कुम्हारों की जबान है। पंडितों की जबान ऊँची है, यह न समझें। अगर वह जबान ऊँची है तो उसे जाने दो आसमान में, उसे जमीन पर काहे लाते हो? कश्मीरी बोलने में, पढ़ने में, मजा आना चाहिए। जोरों से उसे जानना चाहिए। नहीं तो हिंदी उर्दू जोर करेगी। अंग्रेजी उससे भी ज्यादा जोर करेगी फिर हालत ऐसी होगी कि कश्मीरी में बोलना मुश्किल हो जायगा।

आज पढ़े-लिखे लोगों का क्या हाल है? वे आज अंग्रेजी लफ्जों के बिना मुश्किल से बोल सकते हैं। हर जुमलों में दो, तीन अंग्रेजी लफ्ज होते हैं। अब यहाँ यह टोपी है, वह किसान की, मजदूरों की, अवाम की टोपी है। हमारा लिबास मजदूर वैसा होना चाहिए। दूसरा लिबास पहननेवालों को मैं बुरा नहीं मानता हूँ।-अब इन दिनों हमने सामान उठाना शुरू किया है। लोग सिर पर सामान उठाने से, इज्जत महसूस नहीं करते! तरकारी बेचनेवाली उठायेगी, हम बड़े हैं, शहरवाले हैं, इसलिए हम क्यों उठायें—ऐसा न सोचें। महम्मद पैगंबर, भगवान कृष्ण, बुद्ध, ईसामसीह, इन बड़े-बड़े पुरुषों ने मामूली काम किये हैं। महमंद पैगंबर खेती करते थे, गाय को दुहते थे, कबीर बुनते थे, कृष्ण गाय चराते थे, मूसा भेडों को चराते थे। मामूली लोग जिस तरह काम करते हैं, वैसे ये बड़े-बड़े नबी करते थे। इसलिए सिर पर सामान उठाने में शरम नहीं होनी चाहिये। झूठ बोलने में, लूटने में, चूसने में, बुराई करने में, बदनियत में, बुरे कामों में शरम होनी चाहिये। मजदूरी करने में शरम नहीं होनी चाहिए। ◆◆◆

प्रार्थना-प्रवचन बटकुट (कश्मीर) १५-८-'५९

हमारी बात!

आपके दर्शन से हमें बहुत खुशी होती है। हम सिर्फ एक बात चाहते हैं। अमीर, गरीब, हिंदू, मुस्लिम, सिख सब प्यार से रहें। कौम का फर्क अल्ला ने पैदा नहीं किया, इन्सान ने किया है। इसलिए फर्क मिट जाय और सब एक होकर रहें, यही हमारी तमन्ना है।

अल्ला ने सबको हाथ दिये हैं और हरएक के पेट में भूख दी है। उसका मतलब यही है कि काम करके, मेहनत करके खाना चाहिए। उसने सबको दिल दिया है। वह इसीलिए कि हमारा दिल सबके लिए प्यार से भरा हो।

सब काम करें, सब एक-दूसरे के साथ मुहब्बत रखें, यही समझाते हुए आठ साल से हम घूम रहे हैं। आप यह बात समझ लीजिये। ('बारिश बहुत होने के कारण सभा समाप्त हुई)

अनुक्रम

१.	खूबसूरत कश्मीर के इन्सान भी	श्रीनगर २ अगस्त '५९	पृष्ठ ६१७
२	भूदान-तहरीक में अल्ला के	अनंतनाग ६ अगस्त '५९	,, ६१८
३	भाषा और भूषा वर्गभेद	ऐशमुकाम १६ अगस्त '५९	,, ६१९
४	हमारी बात!	बटकुट १५ अगस्त '५९	,, ६२०

श्रीकृष्णदत्त भट्ट, अ० भा० सर्व-सेवा-संघ द्वारा भार्गव भूषण प्रेस, वाराणसी में सम्पादित, मुद्रित और प्रकाशित।
पता: गोलघर, वाराणसी (उ० प्र०) फोन : १३९१ तार : 'सर्व-सेवा' वाराणसी